प्रिय विदे!

दत्ता से मेरी मुलाकात अपने कॉलेज के दिनो मे हुई थी।मै बनारस मे पढ रहा था पर अपनी हर छुट्टी मे धनबाद आया करता था।दत्ता के पिता रिटायर्ड इनकम टैक्स ऑफिसर थे और धनबाद मे रानीबॉध मे एक अहाते के साथ कोठी बनवा कर रहे थे।दत्ता अपने भाई बहनों मे सबसे छोटा था और पढाई के नाम पर पी के राय कॉलेज मे आर्टस मे दाखिला लेकर गुलछर्रे उड़ा रहा था।उससे मेरी जान पहचान अर्जुन के गुमटी पर हुई थी।उन दिनो मै भी अपने स्कूल के कई साथियों की तरह सिगरेट पीना शुरू कर दिया था।उसके एक भाई कोयला भवन मे रहते थे और धनबाद के किसी खदान मे पर्सनल ऑफिसर थे।उन्होने अभीं तक विवाह नही किया था।उनका सेन्ट्रल हॉस्पीटल मे काम करने वाली एक बन्गाली नर्स से कोई अफेयर चल रहा था।उसे दत्ता भी जानता था और कभीं कभार उससे मिलने भी जाया करता था।वो उसे भाभी भी कहता था।वो परिशर मे ही बने नर्सो के हॉस्टल मे रहती थीं।

अपने पिता के ट्रान्सफरेबल सर्विस की वजह से उसके स्कूल की पढाई विहार के दूसरे शहरों मे सम्पन्न हुई।उसका पूरा नाम चिन्मय दत्ता है.पर आरम्भ से ही मै उसे दत्ता कहता रहा और आज तक उसे दत्ता ही कहता हूँ।

दत्ता मेरा एकमात्र मित्र है.जो आज तक अपने पत्रों के जरिये मेरे सम्पर्क मे है।जब उससे मेरी मुलाकात हुई थी.तब मेरे कई जिग्री दोस्त थे।ये उसी ने कहा थाःतुम्हे मेरे लिए अलग से वैकेन्सी निकालने की जरूरत नही है।मै किसी तरह तुम्हारे दोस्तों के बीच विना उन्हे केहूनी मारे अॅड़स लूँगा।उसे अॅड़सना नही पड़ा।मेरे कई दोस्त गम्भीरतापूर्वक अपनी पढाई मे जा लगे.कईयो के कन्धों पर पैसे कमाने का जुआ आ पड़ा।जो दो चार बचे थे.उन्हे मेरी तरह न जाने किन कसौटियों पर कसके अवारा घोषित किया जा चुका था।इस ग्रूप मे वैकेन्सी ही वैकेन्सी थी।

विद्या के धनबाद वापस आने का पता मुझे दत्ता से चला और उसे अपनी भाभी से।कहने लगा कि सेन्ट्रल हॉस्पीटल मे पंजाब से एक नर्स आई हुई है।भाभी वाले हॉस्टल मे ही रहती है।पूरे हॉस्पीटल मे तहलका सा मचा हुआ है।बड़ी खूबसूरत है।भाभी बता रही थीं कि वो अपने बचपन मे धनबाद मे रह चुकी है।जगजीवन नगर के मिडिल स्कूल मे पढी भी है।तुम भी तो इसी स्कूल मे जाते थे न!

ःजाता तो था.पर इस नर्स का नाम वाम भी तुम्हे मालूम है!

ःहॉ!उसका नाम विद्या सिंह है।

ये नाम सुन कर मै चौंकाःइस नाम की एक लड़की तो हमारे क्लास मे भी पढती थी।उसका छोटा भाई संसार सिंह हमसे दो साल पीछे था।पर वो तुम्हारी नर्स विद्या सिंह नही हो सकती।पढाई लिखाई उसके वश की थी ही नही।

ःफिर भी एक बार चल के उसे देख लेने मे हमारा क्या जाता है!

ःअगर तुमलोगों को जाना है तो जाओ।मै नही जाता।धनबाद मे अब बस यही काम बाकी रह गया है।कहके मैने यहीं ये बात समाप्त तो कर दी.परन्तु ये अध्याय नही।

हमारे स्कूल से हट कर जरा पहले एक छोटी सी पुलिया थी.जिसके नीचे एक गन्दा सा नाला बहता था।पता नही इस नाले मे कौन कौन सा गन्ध बहा करता था.फिर भी मुझे इसकी कलकल ध्वनि बड़ी प्यारी लगती थी।स्कूल के दौरान या उसके बाद भी मै अक्सर वहॉ जाया करता था।असमतल जमीनो पर बसे जगजीवन नगर का अपना एक सौन्दर्य था।दिन के उजाले मे ये नगर गाढे लाल गुलमोहर के फूलों से नहाया होता था और अन्धेरे के गहराते ही मुझे लगता था जैसे आसमान का एक टुकड़ा अपने सितारों के साथ इस नगर मे उतर आया हो।

प्रायः हर रोज मुझे शाम के ठीक छ बजे नशे मे धुत्त एक भीमकाय व्यक्ति इस पुलिया से गुजर कर वेलफेयर ऑफिस की कॉलनी की तरफ जाते दिखता था।ढंग से उससे चला तक न जाता था।प्रारम्भ मे तो मैने उसे अनदेखा किया.ये सोच कर कि होगा कोई पियक्कड़.पर समय के साथ मैने उसके बारे मे जानना चाहा।दो तीन दोस्तों से उसकी चर्चा करते ही मुझे उसके बारे मे अविलम्ब सब कुछ पता चल गया।

वेलफेयर ऑफिस मे काम करने वाले ज्यादेतर लोग भूली मे रहते थे.जहॉ से वो या तो पैदल काम पर आते थे या फिर यातायात के दसों साधन बदल कर।उन दिनो वेलफेयर ऑफिस के कमिश्नर रिटायर्ड ब्रिगेडियर बाघ सिंह थे।उन्हे अतिरिक्त पैसे कमाने की एक तरकीब सूझी।उन्होने लाल रंग की एक बस खरीदी और उसे एक नाम भी दियाःब्रिगेडियर बाघ सिंह सर्विस।शुरू मे इस बस से सिर्फ वेलफेयर ऑफिस के ही कर्मचारी भूली से काम पर आते और जाते थे.फिर इससे दूसरे समीपवर्ती ऑफिसों के कर्मचारी भी आने जाने लगे।बस की पहले सीटें भरी.फिर भरी बस और एक समय आया कि इसकी छत पर भी लोग बाग बैठने लगे और इसके दरवाजों की हैन्डिलें पकड़ कर हवा मे झूलने लगे।

ये भीमकाय पियक्कड़ इसी बस का ड्राइवर था।शाम को वो अपनी बस भूली मे खड़ी करके पैदल ही घर चल देता था।रास्ते मे ही झरनापाड़ा आता था.जहॉ देशी शराब का एक ठेका था।इसके सामने शाम होते ही एक मेला लग जाता था।पता नही कितने फेरीवाले वहॉ अपनी चटपटी मसालेदार भूने चने की टोकरी लिए बैठ जाते थे।वो अपने सामने अपने गाहकों के बैठने के लिए दो चार बोरियॉ भी बिछा देते थे।कईयो के पास तो गैस की लालटेने भी होती थीं।ठेके की छोटी खिड़की पर बस शराब मिलती थी।लोग शराब खरीद कर किसी फेरीवाले के सामने बिछी बोरियों पर जा बैठते थे।फेरीवाला न सिर्फ उनके लिए चटपटेदार भूने चने प्याज कंकड़ी टमाटर और निब्बूरस के साथ बनाता था.वल्कि उन्हे चनकी ग्लासें और कपें भी देता था।ठेका तो रात के दो बजे बन्द हो जाता था.पर उसके सामने का लगा मेला सुबह तक जीवन्त रहता था।फेरीवाले भी तब तक वहॉ डटे रहते थे जब तक कि वो अपना एक एक चना सोने के भाव मे न बेच लें।फिर वो अपनी दुकाने समेट लेते थे।पच्चासों लोग वहॉ गई दोपहर तक लुढके रहते थे।उन्हे सूर्य का तमतमाता ताप ही जगा पाता था।

परन्तु अपना ये ड्राइवर वहॉ ज्यादे लम्बा न टिकता था।दारू की एक बोतल आनन फानन चढा के वो गिरते लुढकते अपने घर चल देता था।घर पर उसे अपनी बीबी और बच्चों की मॉ बहन भी तो करनी होती थी।

मेरे क्लास मे कुल तेरह लड़कियॉ थी।इनमे से एक का नाम विद्या था।गर्मियों मे भी उसकी नाकें बहती थीं।उसका नीला स्कर्ट और सफेद ब्लाउज पता नही उसकी मॉ महीने मे कितनी बार धोती थीं या धोती ही न थी।जब देखो तब वो अपनी नाक अपने ब्लाउज की बॉह से या अपने स्कर्ट से पोंछती

रहती थी।वो हम सबसे कद मे भी बड़ी थी।ईश्वर ने कद के अलावे उसे और पॉच चीजें दे रखी थीं।गोरा रंग.सूनहरे घूँघराले बाल.लम्बी नुकीली नाक.बड़ी बड़ी ऑखें और मोतियों जैसे ऑसू।
शायद ही ऐसा कोई दिन रहा होगा जब उसे किसी न किसी वजह से क्लास मे डॉटें न सुनने को मिलती हों.फिर झरते थे उसके मोती।
ये विद्या उसी भीमकाय पियक्कड़ ड्राइवर की बेटी थी।उससे छोटा एक भाई था.जो हमारे ही स्कूल मे पढता था।वो हमसे दो साल पीछे था।उसका नाम संसार सिंह था।सातवीं क्लास तक विद्या हमारे संग रही।
छठवीं क्लास मे उसकी उम्र हमारी ही तरह ग्यारह वर्ष की रही होगी.पर उसके ब्लाउज की बटनें बड़ी मुश्किल से बन्द हो पाती थी।अब उसके रोजाना की डॉटें दिन व दिन कम होती चली जा रही थी।उसकी नाकें अभीं भी बहती थी जिसकी तरफ कोई देखता तक न था।मुंगेर छपरा से आए टीचरों की ऑखें उसके ब्लाउज पर उभरी परिधि या उसकी गोरी सुडौल पिन्डलियों से एक पल को भी न हटती थीं।उसकी कान ऐंठने के बहाने उसकी गाल भी सहला लेते थे।
कभीं कभीं मुझे ईश्वर का ये न्याय समझ मे नही आता था।पता नहीं क्यों उन्होने बिना किसी चारदीवारी और पहरेदारी के कींचड़ मे ऐसा सुन्दर कमल चमका रखा था!
स्कूल मे आए दिन उसकी छेड़ छाड़ तो होती ही थी.अपने घर पर भी वो सुरक्षित न थी।
गर्मी के दिनो मे विद्या का परिवार ही नही.बल्कि पूरा जगजीवननगर ही अपने क्वार्टरों के सामने अपनी शामें और रातें बिताता था।एक कमरे के तंग क्वार्टर और तंग घेरे बरामदे मे इनका दम घूटता था।शाम हुई नही कि हर क्वार्टर के सामने चारपाईयॉ बिछ जाती थीं.चूल्हे जल जाते थे.खुली सड़कों पर.खुले आसमान के नीचे।
विद्या के पड़ोस मे मेरे क्लास का एक लड़का गिरजा रहता था जो उम्र मे हम सबसे बड़ा था।दो साल से फेल भी हो रहा था।
विद्या के पिता दारू के नशे मे धुत्त अपनी बिस्तर पर जा गिरते थे।खाने वाने की उन्हे ऐसे भी कोई परवाह नही रहती थी।विद्या की मॉ अपने पति की रोजाना के गालियों से ऐसे भी टूट चली थीं।बच्चों को शाम का खाना देकर वो भी अपनी चारपाई पकड़ लेती थीं।संसार भी शाम का खाना खाकर सोने चल देता था।रसोई के दूसरे काम निपटा कर जब विद्या अपने बिस्तर पर आती थी तो लगभग पूरा जगजीवननगर सोया होता था।जगा होता था सिर्फ गिरजा।सड़क की बत्तियॉ उँघती रहती थीं।करवट बदल कर विद्या अपनी ऑखें मूँदने को ही होती थी कि गिरजा अपना बिस्तर छोड़ कर विद्या की मच्छरदानी मे जा घूसता था।विरोध के नाम पर वो फूसफूसाकर उसे हमारे ही एक कामुक टीचर बनारसी प्रसाद सिंह के नाम की धमकी देती थी.पर गिरजा को इसकी कोई परवाह ही न थी।विद्या की फरियाद उसकी थकी और टूटी मॉ ही सुन पाती थी।वही उठती थीं और गिरजा का कान उमेठे उसे उसके बिस्तर तक पहुँचा आती थी।फिर उनके अपनी ऑखों की नींद ही गायब हो जाती थी।
उनके जगने मे ज्यादे देर तो कभीं न हुई फिर भी गिरजा विद्या का पूरा बदन टटोल मारा था।स्कूल मे खाली समयों मे वो हमे विद्या के पूरे बदन का आद्योपान्त सप्रसंग विवरण सुनाता था।हमारे बचपन मे वही हमारे लिए कामसूत्र का पहला रचयिता था।साला चटकारी ले लेकर अपनी बहादुरी हमे सुनाया करता था।इसके पहले कि गिरजा अपने टटोलने की सीमा लांघता.विद्या के पिता से उनकी ड्राइवरी ब्रिगेडियर बाघ सिंह ने छीन ली।मिडिल स्कूल की सरकारी परीक्षा हमारे सरों पर थी।विद्या का पूरा परिवार वापस पंजाब लौट गया।
टीचरों की दया दृष्टि से वो सातवीं मे पहुँच तो गई थी.पर छोटे से छोटे सवाल भी उसके पल्ले नही पड़ते थेःऐं.ऐं की होन्दा ए!ये उसका जबाब हुआ करता था।उसकी आवाज भी भैंस जैसी मोटी थी।क्लास की कोई भी लड़की उसके बगल मे बैठने को राजी न थी।घर से उसे टिफिन तक नही मिलते थे।
ये लड़की कहॉ से नर्स बन सकती थी!दूसरी क्लासों मे विद्या नामकी कोई लड़की मुझे याद नही आ रही थी।
मेरे स्कूल के दो चार साथी दूर से इस नर्स को देख आये थे.पर ये अपने क्लास की विद्या को एक दम से भूल चुके थे।ये सब उसकी तुलना फिल्म खामोशी के वहीदा रहमान से करते थे।
एक दिन दत्ता के साथ मै स्टेशन से घर वापस आ रहा था कि वो चिल्ला उठाःसामने देखो।विद्या जा रही है।
देखते ही देखते सेन्ट्रल हॉस्पीटल की एक पीकअॅप हमारे बगल से गुजर गई।जो मै देख पाया वो मात्र इतना ही था कि पिकअॅप मे ड्राइवर के बगल मे कोई एक लड़की बैठी है।दत्ता ने ही मुझे बताया कि हॉस्टल मे चलने वाली कैन्टिन की विद्या मैनेजर भी है।आये दिन खरीददारियों के सिलसिले मे शहर आती है।
एक दिन हिम्मत करके मैने अपनी सायकल सेन्ट्रल हॉस्पीटल की तरफ मोड़ दी।अन्दर से मन घबरा तो रहा था.लेकिन ज्यादे से ज्यादे क्या हो सकता था!किसी से परिचय मॉगना गुनाह थोड़े ही है।इस हॉस्पीटल मे मै पहली बार जा रहा था।ज्यों ज्यों हॉस्पीटल नजदीक आता जा रहा था.मेरे पॉव शिथिल होते जा रहे थे।कभीं कभीं मुझे ये समझ मे नही आता था कि आखिर हममे ऐसा कौन सा कायरपन है और हमारे समाज की कौन सी संकीर्ण ता है कि हम बढ कर अपने हमउम्र और किसी पराई लड़की से बात नही कर पाते है और उन्हे देख कर दूर से सिटियॉ बजाते है या उन पर गन्दे कमेन्टस कसते हैं!
पोर्टिको से हटकर मैने सायकल स्टैंड की और सीधे रिशेप्सन पर पहुँचा।रिशेप्सन पर तीन नर्से खड़ी थीं।मुझे देखते ही एक अन्ग्रेजी मे पूछीःव्हाट आई कैन डू फोर यू!
ःआपके हॉस्पीटल मे एक विद्या सिंह नामकी नर्स काम करती हैं।मै उन्ही से मिलने आया हूँ।
ःआपको उनसे क्या काम है!
ःये मै उन्ही को बताऊँगा।
बिना कुछ कहे उसने अपनी एक उँगली जेनरल वार्ड की ओर बढा कर मुस्कराने लगी।वार्ड के सामने बरामदे मे एक नर्स एक वार्ड ब्वाय को न जाने किन बातों पर डॉटे जा रही थी।मै आहिस्ते आहिस्ते उसकी ओर बढा और जाके उससे थोड़ी दूर पर खड़ा हो गया।जब वो डॉट डपट कर एक दूसरी

दिशा मे आगे बढी. तो माफ कीजिएगा. कहके मैने उसे रोकना चाहा। मुझे एक पल नही लगा विद्दा को पहचानने मे. पर वो मुझे पहचान नही पाई। नमस्ते का जवाब तो वो दी और फिर यस कहके मेरे कुछ कहने का इन्तजार करने लगी। उसका चेहरा अभीं भी सख्त था।
ःमैने तुम्हे देखते ही पहचान लिया। तुम विद्दा हो। मिडिल स्कूल मे तुम मेरे संग पढा करती थी। मेरा नाम प्रमोद है।
मेरा नाम सुनकर उसकी ऑखों मे एक वो दीप्ति चमकी. जो मै आज तक नही भूला हूँ। तत्क्षण उसकी ऑखें सजल हो उठींःचलो कोई तो धनबाद मे है .जिसे मेरी याद आई। मै तो समझी थी कि धनबाद मुझे एक दम से भूल चुका है। कैसे हो तुम!
ःमै तो ठीक ठाक हूँ। तुम कैसी हो!धनबाद कब आई!
ःआओ मेरे संग। चल कर कैबिन मे बैठते है। बाकी बातें वहीं होगीं। तुम्हारे पास थोड़ा समय तो है न!
ःये कुर्त्ता पैजामा कब से पहनना शुरू कर दिया!बिल्कुल नेता लगते हो। मेरा पता कैसे चला!
ःमेरा एक दोस्त है दत्ता। उसकी होने वाली भाभी भी यहीं नर्स हैं। उसी ने बताया।
ःक्या बताया!
ःकि सेन्ट्रल हॉस्पीटल मे पंजाब से एक विद्दा सिंह नामकी एक बेहद खूबसूरत नर्स आई है। वो धनबाद मे रह चुकी है। जगजीवन नगर के मिडिल स्कूल मे पढ चुकी है।
ःतुम्हारे दोस्त की भाभी का क्या नाम है!
ःये मुझे पता नही है।
ःऔर तुम्हारे दोस्त का पूरा नाम क्या है!
ःचिन्मय दत्ता।
ःतुम कैसी हो विद्दा!तुम्हे देख कर ये नही लगता कि तुम वही मिडिल स्कूल वाली विद्दा हो। तुम कितनी खूबसूरत हो चली हो। दत्ता ठीक ही कहता है कि तुमने यहॉ तहलका मचा रखा है। तुम तो बस किसी मरीज की तरफ प्यार से देख भर लो। वो आप ही ठीक हो जाएगा।
तकरीबन घन्टे भर मै विद्दा के संग रहा। संक्षिप्त मे वो अपना सारा इतिहास सुना डाली। कहॉ और कैसे उसने मैट्रिक की। कैसे उसने नर्स की कोर्स और ट्रेनिन्ग की। कैसे वो धनबाद आई।
ःबड़ी मुसीबतें मुझे उठानी पड़ी है प्रमोद। ये नर्स की सफेद पोशाक मुझे बड़ी मॅहगी पड़ी है। कहके वो न जाने कहॉ अपने अतीत मे खो गई। तभी यही कोई पच्चीस छब्बीस वर्ष का एक जूनियर डॉक्टर एक तूफान की तरह कैबिन मे आया और मुझे वहॉ बैठा देख कर चौंका। मेरा परिचय भी उसे भारी लगा। कोई बहाना बना कर वहॉ से चलता बना।
ःकौन था ये बदतमीज!
विद्दा मुस्कराने लगी। तुम नही बदले प्रमोद।
ःकौन था ये!
ःअनिल श्रीवास्तव। हमारे यहॉ हाऊस जॉब कर रहा है। भागलपुर का रहने वाला है। मेरे लिए थोड़ा पोसेसीव है।
ःतुम भी उसे चाहती हो!
ःहॉ।
ःप्यार करने को तुम्हे यही एक कचड़ा मिला था!
विद्दा ने अपने बाल नही कटवाये थे। वो न जाने कितने क्लिपों और पीनो से उन्हे समेट कर अपनी टोपी मे छुपाये रखती थी। कद मे वो मुझसे दो चार सेंटीमीटर बड़ी ही होगी। वो जरा झुक कर चलती थी। उसके व्यवहारों में बड़ी संजीदगी आ गई थी। वो काफी गंभीर भी हो चली थी। कद और सौन्दर्य तो उसे ईश्वर से मिला ही था। ऊपर से उसका सफेद यूनिफार्म. सफेद तिरछी टोपी. सफेद जूराबें. ऊँची ऍड़ी की सफेद चप्पलें. गले मे सोने की पतली जंजीर ऊपर की जेब मे दो गोल्डेन कलमें कलाई पर बॅधी गोल्डेन घड़ी. जेब के बाहर झॉकता उसका स्टेथोस्कोप. ये सब कुछ उसके सौन्दर्य को कुछ ज्यादे ही भव्य बना रखा था।
जब मै चलना चाहा. तो उठ कर मेरी दोनो बॉहें थाम लीःफिर कब मिलने आओगे!
ःपता नही। शायद अगली छुट्टियों मे। अपना ख्याल रखना. कहके बिना उसकी ओर देखे मै चल पड़ा।
विद्दा के ही कहने पर मै उससे कूल चार बार हॉस्पीटल के ही परिशर मे मिला। विद्दा से आखिरी बार मै उसके हॉस्टल के वेटिंगरूम मे मिलने गया था। वो दूर से ही मुझे कुछ परेशान सी दिखी। अपने दोनो हॉथ जोड़ कर उसने मुझे बैठने को कहा। मिनटों वो अपने दूपट्टे से खेलती रही। पहल करते हुए मैने ही उससे पूछाःक्या बात है विद्दा!तबीयत तो ठीक है न!
इशारे से ही उसने हॉ कहा।
ःमुझे तुमसे कुछ कहना है. अकस्मात उसके गाल थरथराने लगे।
मै निःशब्द उसके कुछ कहने का इन्तजार किये जा रहा था।
वो अभीं भी अपने दूपट्टे से खेले जा रही थी। एक अव्यक्त आशंका मेरे मन को घेरे जा रही थी। कहीं अनिल से कोई खटपट तो नही हो गई है। वो चाहे जैसा भी हो. एक ऊँची शिक्षा तो उसके पास थी ही। वो विद्दा को एक समर्थ आड़ तो दे ही सकता था।
परन्तु बात कुछ और ही थी। विद्दा ने अपना मौन तोड़ाःआज के बाद मै तुमसे कभीं नही मिलूँगी। हमारे मिलने को अनिल बड़ा व्यक्तिगत लेता है।
मेरा मन ग्लानियों से भर आया। चुपचाप उठा और चलने को ही था कि विद्दा ने बड़ी मजबूती से मेरी दाहिनी कलाई पकड़ लीःमुझसे नाराज हो कर नही जाना। बड़ी लाचारी मे मुझे तुम्हे ये कहना पड़ा है।
विद्दा से अपनी कलाई जबर्दस्ती छुड़वा कर मै वापस घर चला आया। इसके बाद मैने सेन्ट्रल हॉस्पीटल की तरफ कभीं अपना रूख नही किया।

दत्ता के पत्र मुझे अनवरत मिलते रहे। गोकि मै उसे विद्दा के बारे मे कुछ भी लिखने को मना कर आया था. पर उसका शायद ही ऐसा कोई पत्र होगा जिसमे विद्दा का जिक्र न रहा हो। मैने व्यक्तिगत विद्दा के नाम न तो कोई सन्देश भेजा और न ही अभिनन्दन वगैरह। मुझे सिर्फ एक बात का दुःख आज तक है कि जिस अनिल ने मेरी उपेक्षा की. विद्दा ने उसी की वजह से मुझे नकार दिया। मै अपनी उपेक्षा वर्दाश्त नही कर सकता। ये मेरी एक चारित्रिक कमजोरी थी और आज भी है।

दत्ता की भाभी का नाम आभा था। उन्हे वो आज के दिन भी भाभी ही कहता है. गोकि उसके भईया ने उन्हे व्याहा नही ठीक वैसे ही जैसे अनिल ने विद्दा को नही व्याहा। दो वर्ष वो विद्दा के पैसे पर ऐश किया। अपने इन्टर्नशीप और हाऊसजॉव का पैसा घर भेजता रहा. फिर विद्दा को अॅगूठा दिखा कर ऐसे लापता हो गया. जैसे उसे और उसके परिवार को जमीन खा गई हो। कई बार विद्दा उसका पता लगाने भागलपुर भी गई. पर ये कायस्थ परिवार तो एक नम्वर का घाघ निकला।

विद्दा के पेट मे अनिल से एक बच्चा भी आ गया था. जो उसे गिरवाना पड़ गया। इस तरह की लड़कियों को धनवाद मे फरकट कहा जाता है। अब तक धनबाद चुप बैठा था। अब एकबारगी जग गया था। कैन्टिन की मैनेजरी विद्दा से ले ली गई। धनबाद के मवाली अब उसे कौन सी हटिया बाजार करने देते!

हॉस्पीटल के अदने कर्मचारी तक उससे हल्की फूल्की मजाकें करने लगे थे। धनबाद का माल और साला भागलपुरी खाके चला गया. ये धनबाद की सबसे बड़ी बदहजमी थी। विद्दा की बनी बनाई इज्जत पानी मे मिल चुकी थी।

वो अभीं भी हॉस्टल मे रहने की वजह से सुरक्षित थी. पर जब उसे मैनेजमेन्ट ने एक मकान एलॉट किया. तब सबसे पहले उसी के मेम्बरान चाय के बहाने उसके यहॉ मौके बेमौके धमकने लगे। इस मकान मे एक लैट्रिन तो थी. पर नहाने धोने के लिए अलग से कोई कमरा नही था। उसके खुले ऑगन मे बस एक नलका था। विद्दा ऑगन मे क्या आई कि आधे से ज्यादे सेन्ट्रल हॉस्पीटल दूसरी मंजिल की खिड़कियों पर आ डटता था। सुन्दर और आकर्षक होने की सजा मिल रही थी विद्दा को। अन्धेरा क्या छाया कि झरिया. करकेन्द. लोदना. डिगवाडीह इत्यादि क्षेत्रों के मवाली जीपों मे लद कर जगजीवन नगर मे आ धमकते थे. पर विद्दा के मकान की खिड़की और उसके ऑगन का दरवाजा अभीं भी सलामत था। सिफ्ट डयूटियों की वजह से मैनेजमेन्ट की तरफ से उसे एक फोन भी मिला हुआ था। शायद यही टेलीफोन अभीं तक उसकी रक्षा कर रहा था।

दत्ता के वश की पढाई लिखाई नही थी। उससे बी ए भी नही किया जा सका. पर आज के दिनो मे वो धनबाद का एक जाना माना इलेक्ट्रिक कान्ट्रैक्टर है। उसकी पत्नी का नाम मनष्वी है। उसका बड़ा बेटा बेनी नागपुर मे इंजीनियर है और छोटा कन्नू बैंगलोर मे जर्मनी के एस आ पे मे कमप्यूटर इंजीनियर है।ःबेकार बॉध के पास हमारे पास एक छोटा सा मकान है। वहीं हम दानो बूढे बूढी रहते हैं। मेरे बेटों का विवाह अभीं तक नही हुआ है। जब करूॅगा. तब तुम्हे भी बुलाऊॅगा। अगर नही आ सकोगे. तो वहीं से वरवधु को अपना आर्शीवाद भेज देना। भाई बहन रिश्तेदार सब समय के साथ पराये हो जाते हैं. पर एक बन्धु का साथ कभीं पराया नही हो पाता है। इतनी दूर बर्लिन मे रहते हो. पर मेरे दिल मे रहते हो।

मनष्वी को लेकर विद्दा से मिलने गया था। अब वो बूढी हो चली है। बूढे तो हम भी हो चले हैं। सुवह उठता हॅू तो एक एक हडी बजती है। शरीर का शायद ही कोई भाग होगा जो मुझसे चित्कार कर मुझे अपना दुख न सुनाता हो। काम के नाम पर मेरी एक एक पसली रोती है. कराहती है। सर पर शायद ही एकाध बाल बचे हों। विद्दा के सर के बाल भी पक कर सन की तरह सफेद हो चले हैं। बिना कमर थामे न तो उससे उठा जाता है और न बैठा जाता है। जब मैने उससे कहा कि विद्दा दी!हम बूढे हो गये तो कहने लगीं कि चिन्मय तुम इस बात पर रोओ। मै खुश हॅू कि मै समय से पहले ही बूढी हो गई। मुझे ये सुन कर इतनी पीड़ा हुई कि तुम्हे बता नही सकता। जब भी उससे मिलने जाता हॅू. वो तुम्हारे बारे मे भी पूछती है। मै उसे तुम्हारे बारे मे क्या बता सकता हॅू। मेरा तुमसे कोई सम्पर्क ही नही है। जिस प्रकार से तुम अपनी जिद़ नही तोड़ सकते. ठीक वैसे ही मै भी अपनी कसम नही तोड़ सकता। तुम मना करके गये थे कि विद्दा को तुम्हारे बारे मे कुछ भी पता नही चलना चाहिये। आज तक मॅुह पर ताला लगाये बैठा हॅू। अनिल की वजह से विद्दा ने तुमसे मिलने से इन्कार कर दिया. वो भी एक सभ्य भाषा मे और तुम आज तक अपने मन मे इस बात को लिए बैठे हो। मैने नही सोचा था कि तुम इतने कठोर भी हो सकते हो।

मै अपने पढने की मेज साफ करने लग पडता हॅू। ।सुबह से ही अन्धाधून्ध वर्फबारी हो रही है। रूई के फाहों की तरह बर्फ मेरी खिड़की के शीशों पर गिरी जा रही हैं। जब भी नजरें उठा कर बाहर देखता हॅू. तो सामने के ऊॅचे चीड़ पेंड़ के पीछे से एक फसासेन नाम का पक्षी अपनी पंखों को दवाये दाक्षिण से उत्तर दिशा की तरफ उड़ता नज़र आता है फिर देखते ही देखते ऑखों से ओझल हो जाता है। मै अपना लेटरपैड ड्रायर से बाहर निकालता हॅू। प्रिय विदे के अलावे मुझसे एक भी शब्द नही लिखा जाता हैः

प्रमोद कुमार सिंह